J.N. MISHRA   1-44 - वंशस्थ , 45 - पु. 46 - मालिनी

मल्लिनाथ ने घण्टापथ नाम की व्याख्या किया है।

श्लोक वाचनं

श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम
प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्क्त वेदितुम्
स वर्णलिङ्गी विदितः समाययौ
युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः (किरातार्जुनीयम्)
प्र. सर्ग प्रथम पद्य

व्याकरण परिचय

श्रियः = श्री शब्द षष्ठी एक व., (कर्तृ कर्मणोः कृतिः (षष्ठी)

कुरूणाम् = कुरु शब्द का षष्ठी ब. व. (देशवाची नं. के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

अधिपस्य = अधिप शब्द का षष्ठी ए. व.

पालनीम = पालनी शब्द का द्वि. ए. व. , प्रजासु = प्रजा स.ए.व.

वृत्तिं = √वृत् + क्तिन , यम = यत

अयुङ्क्त = √युज + लङ् अन्यपु.ए.व., वेदितुम = विद + तुमुन

वर्णलिङ्गी = वर्णलिङ्गिन् प्रथमा एक व. (षष्ठी तत्पुरुष समास (सम्प्राप्तवान)

विदितः = विद + क्त भावे

समाययौ = सम + आङ् + √या + लिट (क्रिया पद)

युधिष्ठिर = युधि स्थिरः इति युधिष्ठिरः (अलुक तत्पुरुष)

द्वैतवने = द्वैतं च तद्वनं च इति द्वैतवनं तस्मिन (कर्मधारय)

वनेचरः = वने चरतीति वनेचरः (अलुक तत्पुरुष) (वनचरः)

(किरातः, परिचट (ट) वने + चर + ट)

छंद = वंशस्थ जतौ तु जरौ वंशस्थमुदीरितम

अलंकार = वृत्यनुप्रास (मल्लिनाथ) छेकानुप्रास

⇒ वस्तुनिर्देशात्मक मंगलाचरण

⇒ किरातार्जुनीयम = किरातश्च अर्जुनश्च = किरातार्जुनौ (द्वन्द्व) किरातार्जुनौ अधिकृत्य कृतं काव्यं किरातार्जुनीयम। शिशुक्रन्द सूत्र से छ प्रत्यय किरातार्जुन + छ। आयनेयी सूत्र से छ को ईय आदेश होकर किरातार्जुनीय शब्द बना है।

हिन्दी व्याख्या

कुरुदेश के राजा (दुर्योधन) की राजलक्ष्मी का पालन करने वाली प्रजानीति को जानने के लिए (युधिष्ठिर) ने जिसको नियुक्त किया था, ब्रह्मचारी के भेष को धारण करने वाले वह किरात (दुर्योधन के संपूर्ण वृत्तांत को) जानकर द्वैतवन में युधिष्ठिर के पास वापस लौट आया।

किरातार्जुनीयम लेखक = महाकवि भारवि

→ बृहत्त्रयी में परिगणित 18 सर्गों में विभक्त 1030 श्लोक है।

→ कथानक का प्रारम्भ श्री से तथा अंत लक्ष्मी से

→ नायक - अर्जुन (धीरोदात्त)
नायिका = द्रौपदी
प्रतिनायक = किरात वेशधारी शिव
कथानक का प्रयोजन = पाशुपत अस्त्र का प्राप्ति

→ प्रमुख रस = वीर

→ कथा महाभारत के वन पर्व से लिया गया है।

→ मल्लिनाथ ने घण्टापथ नामक व्याख्या किया है।

→ प्रथम सर्ग में 46 पद्य है।

→ 1 - 44 तक वंशस्थ, 45 वें - पुष्पिताग्रा
46 वें में मालिनी छंद है।

Scanned with OKEN Scanner